ढांडा ढाई का

एक बहुत निर्धन किसान था। उसने बड़ी मेहनत से डेढ़ सौ रुपये जोड़े और बैल खरीदने पशु मेले में गया। बहुत कोशिश करने के बाद उसे डेढ़ सौ रुपये में एक अच्छी नस्ल का बूढ़ा (ढांडा) बैल मिल गया। किसान ने सोचा, 'ठीक रहेगा। काम ही तो लेना है।'

बैल खरीदकर वह अपने गांव की ओर चल पड़ा। रास्ते में एक छोटी-सी ढाणी (बस्ती) पड़ती थी। किसान ने रैन बसेरे के लिए जो जगह चुनी वह ठिकाना एक ऐसे आदमी का था जो ठगी और चोरी किया करता था। ठग के चार हट्टे-कट्टे लड़के थे—बड़े चुस्त, बड़े चालाक!

चारों लड़कों ने देखा किसान भोला-भाला है। उसे आसानी से ठगा जा सकता है। उन्होंने किसान से बैल बेच देने को कहा। किसान ने सोचा कि बीस-तीस रुपये का लाभ हो जाए तो बुराई ही क्या है।

किसान को मोल-भाव से परेशान देखकर ठग के लड़के ने सुझाव दिया, "किसी बड़े सयाने को पंच मान लें। जितनी कीमत वह बताए वही पक्की तय हो जाए।"

भोले-भाले किसान ने श्रद्धा से बूढ़े ठग से कहा, "ताऊजी आप बड़े हैं, सयाने हैं। जो मोल आप आंकेंगे, मुझे मंजूर होगा।"

"और हमें भी पूरी तरह स्वीकार होगा।" चारों लड़के खुशी से एक स्वर में बोले।

बढ़ा ठग बोला — "तो सुनो भई दोनों फरीक! चाहे मैं जो भी फैसला दूं, तुम्हें मानना होगा।

सारे एक स्वर में बोले, "हां।"

"तो ठीक है। मैं अभी फैसला किए देता हूं।" इतना कह बूढ़ा ठग चारपाई से उठा और बैल को आगे-पीछे से देखने का नाटक करने लगा। उसने बैल के दांत देखे। पूंछ को हाथ में पकड़कर मरोड़ा। नीचे-ऊपर टटोला। किसान को पूरा विश्वास था कि बैल के पैसे खरीद से कुछ अधिक आंकेगा

ताऊ। ठग बैल को ऊपर-नीचे से देखभाल कर चारपाई पर आ बैठा। किसान बड़ी उत्सुकता से देख रहा था।

तभी बूढ़े ठग ने किसान से कहा, ''देख भई चौधरी, तेरा ढांडा ढाई का।'' (अर्थात् तेरा बूढ़ा बैल कुल अढ़ाई रुपये का है।)

किसान हक्का-बक्का रह गया। बूढ़ा न्याय की मूर्ति के स्थान पर धोखेबाज सिद्ध हुआ, परन्तु अब करे भी क्या? वचन दे चुका था। खून का घूंट पीकर रह गया। उसने चुपचाप अढ़ाई रुपये लिए और भारी कदमों से अपने गांव का रास्ता पकड़ा।

घर पहुंचा तो चौधरिन ने पूछा, ''बैल नहीं लाए?''

लाया तो था। परन्तु ठगा गया रास्ते में। बहुत बड़ा धोखा हो गया मेरे साथ। लहू-पसीने की कमाई हजम कर गए ठग।'' चौधरी ने भारी मन से कहा।

इस भोंडे विश्वासघात के कारण रात को उसे नींद नहीं आई। ठगों को वह पाठ पढ़ाना चाहता था। सहसा उसे एक तरकीब सूझी।

अगले दिन अपनी पत्नी की बढ़िया वेशभूषा की पोटली बांध वह चल पड़ा ठगों की ढाणी की तरफ ठगों के चौधरी को सबक सिखाने।

ठगों की ढाणी के पास एक जंगल था। वहां किसान ने अपनी घरवाली के कपड़े पहने, श्रृंगार किया। एक रूपसी के वेश में वह ठगों के बाड़े में पहुंचा। बूढ़ा ठग और उसके चारों बेटे अपने घर एक औरत देख बड़े खुश हुए। चारों में से किसी का विवाह नहीं हुआ था। ठगों के घर में कौन रिश्ता करे? औरत रो रही थी घूंघट में। उसने करुण-कथा कही, ''मुझे मेरे मरद ने घर से निकाल दिया। मेरा कोई ठौर-ठिकाना नहीं है।''

बड़े लड़के ने कहा, ''तुम चिन्ता क्यों करती हो? इस घर को भी अपना ही घर समझो।''

''परन्तु मैं यहां रह कैसे सकती हूं?''

"मुझसे विवाह कर लो।" बड़े ने कहा।

तभी तीनों लड़के भी बोल पड़, "तुमसे क्यों कर ले विवाह? हम क्या बुरे हैं?"

चारों भाइयों का झगड़ा हो गया।

झगड़ा बढ़ा तो स्त्री बोली, "आप लोग लड़ क्यों रहे हैं? मैं परीक्षा ले लेती हूं।"

"हां, ठीक है।" चारों एक ही बार में बोल पड़े।

"तो सुनो। मेरे लिए शहर से जो बनारसी साड़ी, मथुरा के पेड़े और सहारनपुरी आम लेकर सबसे पहले लौटेगा, उसी से विवाह कर लूंगी।" औरत ने कहा।

अब क्या था, चारों छैला भाग खड़े हुए शहर की तरफ। किसान ने जब देख लिया कि चारों बहुत दूर निकल गए हैं तो झपाटे से स्त्री-वेश उतार, दरवाजा बन्द कर, बांह से पकड़ बूढ़े ठग को और हुक्म दिया, "चल बूढ़े खूंटे पर।"

खूंटे से बांधकर किसाने ने उसे सोटे से यों पीटना शुरू किया कि ठग की आंखों के सामने मौत नाचने लगी। किसान मारता था और पूछता था, "क्यों बूढ़े, मेरा ढांडा ढाई का?" और बूढ़ा कराहता हुआ कहता था, "माफ कर। मुझे छोड़ दे।"

हाथ जमाते हुए किसान ने कहा, "तो बता, धन कहां रखा है?" बूढ़े ठग ने दबा हुआ धन बताया। किसान ने रुपयों की पोटली बांधी और अपने गांव की राह ली। पूरे पांच सौ रुपये हाथ लगे। धन तो मिल गया, परन्तु बूढ़े की ठगी का बदला लेने की भावना शांत नहीं हुई।

उधर लड़के जब आए तो बापू को खूंटे से बंधा पाया। बूढ़े ने रोते-रोते, हाय-हाय करते सारा हाल कह सुनाया। सारे जने मन मारकर रह गए। क्या करें?

अगले दिन बूढ़े ठग को पता चला कि चौपाल में बड़े गुणी हकीमजी आए हैं, तो लड़कों से कहा, "मेरा शरीर उस दुष्ट ने सोटे मार-मारकर तोड़ दिया। हकीमजी से मरहम-पट्टी तो करवा दो।"

लड़कों ने हकीमजी को बुलवाया। हकीम कह रहा था, "हम सच्चे गुरु के पहुंचे हुए चेले हैं। हमें पता है ताऊ, तुम्हें कहां-कहां मार पड़ी है। बड़ा दुष्ट था कोई। बूढ़े शरीर को नहीं देखा। बड़ी पिटाई हुई है तुम्हारी।

हकीम ने नब्ज देखी। दिल पर हाथ रखकर देखा। चोटें को दबाया तो बूढ़ा दर्द के मारे तड़प उठा। कुछ देर विचार-मग्न होकर हकीम ने कहा, "चार तरह की जड़ी-बूटियां चाहिए। एक बूटी पूर्व में, दूसरी पश्चिम में, तीसरी दक्षिण में और चौथी उत्तर के जंगल में मिलेगी।"

लड़के बोले, "हम अभी लाए देते हैं।"

चारों लड़के चारों दिशाओं में दौड़ पड़े। अब रह गए घर में बूढ़ा ठग और हकीम। हकीम ने दरवाजे पर सांकल चढ़ाई। हकीम का वेश उतार दिया। बूढ़ा देखकर चीख पड़ा। वही किसान खड़ा था सामने। किसान ने मुस्कराते हुए कहा, "चल बूढ़े खूंटे पर।"

किसान रस्सा बांधकर फिर बूढ़े की पिटाई करने लगा। साथ-साथ पूछ भी रहा था उससे, "क्यों बूढ़े, मेरा ढांडा ढाई का?"

बूढ़े ठग ने बिलबिला उठा। दो सौ रुपये देकर जान छुड़ाई। किसान दो सौ रुपये लेकर नौ दो ग्यारह हो गया।

लड़के आए तो बूढ़ा फिर खूंटे से बंधा था। अपनी व्यथा फिर सुनाई बूढ़े ने बेटों को। दांत पीसकर रह गए चारों बेटे। सोच रहे थे—अगर कहीं मिल जाए तो खून पी जाएं उसका।

उधर किसान फिर पहुंच गया ढाणी के पास के जंगल में। एक हट्टा-कट्टा चरवाहे का लड़का पशु चरा रहा था। किसान ने उसे कहा, "देख भई पाली! एक काम कर दे मेरा। वह ढाणी का बूढ़ा ठग है ना, उसके द्वार के सामने जाकर बूढ़े को यह कहकर भाग आ, क्यों बूढ़े, मेरा ढांडा ढाई का?"

किसान ने यह भी समझा दिया कि लड़के पीछा करेंगे। हर तरह से पकड़ने का प्रयत्न करेंगे, उनके हाथ मत लगना। अब चरवाहे

को क्या चाहिए था? एक मज़ाक का मज़ाक और साथ में पांच रुपये की भेंट, जो किसान ने उसे दी थी! जहां तक उसे पकड़ पाने का सवाल था वह तो कोई भी नहीं कर सकता था। एक चरवाहा और ऊपर से सांड-सी देह। सो चला गया वह ठग के घर के सामने। बूढ़ा सामने ही बैठा मिला। बूढ़े को लक्ष्य कर चरवाहा ने कह दिया, "क्यों बूढ़े, मेरा ढांडा ढाई का!"

बूढ़ा जोर से चिल्लाया, "फिर आ गया। पकड़ो! पकड़ो!"

चारों लड़के भागे पीछे। चरवाहा था कि बिजली की-सी तेजी से दौड़ा चला जा रहा था—जंगल की ओर।

उधर किसान फिर आ लिया ठग के घर में। दरवाजा बंद करके बूढ़े से कहा, "क्यों बूढ़े, मेरा ढांडा ढाई का?"

अब तो ठग के प्राण सूख गए। वह सूखे पत्ते की तरह थर-थर कांप रहा था। किसान उसे यम का अवतार लग रहा था। किसान के पांव पकड़-कर रोते-रोते बोला, "मुझे क्षमा कर दे। मैं और मेरे बेटे अब कभी ठगी नहीं करेंगे।"

ज़मीन पर अपनी नाक से तीन लकीरें रगड़!"

बूढ़े ने ऐसा ही किया। अब किसान ने न तो उसे मारा और न ही उससे धन मांगा। वह लौट गया। उस दिन के बाद बूढ़े और उसके बेटों ने ठगी छोड़ ही दी।

हरियाणवी लोककथा
देवीशंकर प्रभाकर